REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2018

मुगलकाल में पूर्व औरंगजेब कालीन जाट विपल्वः "सक्षिप्त एतिहासिक अध्ययन"

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य – एच के एल कालेज ऑफ ऐजूकेशन, गुरूहरसहाय, फिरोजपुर (पंजाब)

सारांश

अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के कारण जाट शक्ति ने बाबर को अपनी कबीलाई शक्ति का अहसास अवश्य कराया, इन्होंने विदेशी आक्रांताओं को रोकने के लिये सदैव हल छोडकर तलवार अवश्य उठायी। शेरशाह सूरी के समय जाट सरदार फतह खाँ को रोकने के लिये उसे ठोस रणनीति अपनानी पड़ी।

अकबर की धार्मिक सहिष्णुता व समन्वयवादी नीति व जहाँगीर की उदार नीति ने इन्हें शान्त रखा परन्तु शाहजहाँ के शासनकाल में जाटों की सभ्यता व संस्कृति में हस्तक्षेप ने इन्हें अन्य जातियों के साथ संगठित होकर विप्लव करने के लिये अवश्य प्रेरित किया, क्योंकि जाट मिट सकते हैं लेकिन दुश्मन के आगे झुक नहीं सकते।

जाट शक्ति की एक बड़ी विशेषता उनका जन्मभूमि के प्रति अनुराग है। जाट विशिष्ट वंश न होकर एक प्रकार से एक संघ है। औरंगजेब से पूर्व मुगलकाल में जहाँ भी जाटों का उल्लेख मिलता है उसका व्यवहारिक महत्व बहुत ही कम है परन्तु इससे इनकी राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय विशिष्टताओं की जानकारी अवश्य प्राप्त हो जाती है। इन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियॉ होते हुये भी अपनी सभ्यता, संस्कृति, परम्पराओं एवं मान – सम्मान की रक्षा के लिये कभी भी समझौता नहीं किया। यद्यपि अपने शत्रुओं से पराजित होने के बाद भी भयानक स्थितियों को आगे वाले समय में कभी भी याद नही रखा अस्तु पुनः शत्रुओं से नये जोश के साथ युद्ध किया।

मुगल सम्राट बाबर तथा जाट विद्रोह

मुगलिया सल्तनत के संस्थापक बाबर ने जब भारत की पवित्र भूमि पर पैर रखा तो उसे सर्व प्रथम विदेशी आक्रान्ताओं के घोर विरोधी जाटों से टक्कर लेनी पड़ी। बाबर का पंजाब मे प्रवेश करते ही नीलाभ[1] और भीरा[2] नामक पर्वतों के बीच में बहुसंख्या में निवास करने वाले जाट परिवारों का सामना करना पड़ा। यह उस समय गक्कर सरदारों की आधीनता में निवास करते थे। यह क्षेत्र अनेक जाट कबीलों में बंटा हुआ था तथा यह किसान नदियों के समीपवर्ती इलाकों खादरों तथा गुफाओं में सुरक्षित निवास करते थे। किसान होने पर भी इन्होने अपनी विद्रोही प्रवृत्ति (जो कि इनकी विरासत में प्राप्त होती है) को नही छोड़ा था।

विदेशी आक्रान्त मुसलमानों को देखते ही इन्होंने उनकों लूटना व छापामार प्रणाली से इनको आतंकित करना प्रारम्भ किया। इस पर बाबर ने इन स्वाधीनता प्रेमी, सभ्यता व संस्कृति के लिए मर मिटने वाले जाट कृषकों के समुदाय का कठोरता से दमन कर इनके इलाकों को बेदर्दी से उजाड़ कर उन्हें भगा दिया।

मुगल सम्राट बाबर ने स्वयं अपने संस्मरण दिनांक 29 : 1525 ई0 के दिन लिखा है यदि कोई हिन्दुस्तान जाये तो उन्हें असंख्य घुमक्कड़ जत्थों के रूप में जाट और गूजर पहाड़ी तथा मैदानी इलाकों मे बैल तथा भैंस लूटने के लिए भीड़ मचाते हुए मिलेंगे। वे अभावी बड़े ही मूर्ख तथा निष्ठुर होते है। स्यालकोट के

निःसहाय, भूखे, नंगे, भिखारी तथा दरिद्र हमारे शिविर में शरण लेने आ रहे थे। अचानक शोरगुल हुआ ओर वे लूट लिये गये। जिन मूर्खो ने उद्दण्डता प्रदर्शित की थी मैने उनकी खोज कराई। दो–तीन व्यक्तियों के विषय मे मैने आदेश दिया था कि उन्हें टुकड़े–टुकड़े कर दिया जाये।[3] **डॉ जदुनाथ सरकार, बाबर एवं जाटों** के सम्बन्ध में यहां तक कहा के पानीपत युद्ध 1526 में सुल्तान इब्राहीम लोदी के साथ सेहबन्दी पैदलों की जमात में जाट किसान भी शामिल थे।[4] **डॉ सरकार** के कथन सही है क्योंकि किसी भी विदेशी अक्रान्ता को रोकने के लिए कृषक जाट हल छोड़कर तलवार उठा लिया करते हैं इसके बाद के परिणाम की वे कभी चिन्ता नहीं करते।

शेरशाह सूरी एवंम जाट विद्रोह(1543 ई0)

शेरशाह सूरी द्वारा **हुमायूं** को पराजित कर दिल्ली तथा आगरा पर अधिकार कर लेने के बाद भारत में अराजकता की स्थिति दृष्टिगोचर होने लगी। अनेक प्रान्तों के सूबेदार फौजदार तथा किलेदारों ने अपने आपको स्वतंत्र घोषित कर दिया। वे मनमाने ढ़ंग से आचरण करने लगे। ऐसी स्थिति में **मुल्तान** के निकट **कोटा काबूला** के आस – पास की जनता ने **जाट** परिवार के शक्ति सम्पत्र **सरदार फतह खां जाट**[5] को अपना सरदार बनाया। **सरदार फतह खां** ने अपनी शक्ति को बढ़ाने के लिए बलूची सरदारों के साथ मिलकर **लाखी जंगल रावी – सतलज** नदियों का मध्यवर्ती इलाके पर प्रभुत्व स्थापित कर लिया तथा **लाहौर** से लेकर **पानीपत** के मुख्य मार्गो पर लगान वसूली कर व्यपारियों तथा शाही खजानों को लूट कर शूर सम्राज्य के लिए चुनौती बन गया। **शेरशाह** ने आगरा तथा दिल्ली में अपनी स्थिति को सुदृढ़ कर **हैवात खां नियाजी** को पंजाब का सूबेदार नियुक्त किया और विद्रोह के दमन का आदेश दिया। **हैवात खां** एक संगठित सेना के साथ इस विद्रोह के दमन के लिए **लाहौर से मुलतान** की ओर बढ़ा। वह **सतगढ़**[6] के मार्ग से होता हुआ पाकपत्तन[7] नामक स्थान पर पहुंचा।

जाट सरदार फतह खां को **हैवात खां** के आने की सूचना मिलते ही उसने अपने साथियों को एकत्र कर सभी स्त्री, बालकों सहित **पाकपत्तन** क्षेत्र खाली कर दिया। साथ ही **कुशेर फतहगढ़**[8] के समीप एक गढ़ी मे शरण ली। **हैवात खां निजामी भी फतह खां** का पीछा करता हुआ **कुशेर फतहगढ़** के क्षेत्र में पहुंच गया तथा उसने गढ़ी को चारों ओर से घेर लिया। **जाट सरदार फतह खां** जानता था कि एक संगठित सेना का सामना करना मूर्खता है इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए उसने संधिवार्ता के रास्ता अख्वित्यार किया और इसके लिए **कुतुबआलम भोख फरीद** के पुत्र **शेख इब्राहीम** को चुना गया। जब **फतेह खां** संधि करने के लिए **हैवात खां** के शिविर में पंहुचा वो उसे घेर कर बंदी बना लिया गया। अपने सरदार **फतह खां** की गिरफ्तारी का पता चलते ही **जाट तथा बलूची** सेना ने अपने को **भीडू (सीडू)** नामक हिन्दू **बलूम सरदार** के नेतृत्व में संगठन बना लिया। 300 प्रौढ़ सैनिकों ने एक रात्रि अचानक शत्रु सेना में प्रवेश किया। यह सिपाही अपने परिवारों के साथ अफगान छावनी को चीर कर भाग निकले। अफगान सैनिकों ने इनका पीछा किया ओर हिन्दु **बलूच सरदार को बख्शूलगाह** ने गिरफतार कर लिया। **जाट तथा बलूचो** का यह विद्रोह नेतृत्व के अभाव में शांत रहा। तत्पश्चात **हैवात खां ने मुलतान** शहर पर अधिकार कर लिया। **शेरशाह सूरी** ने विद्रोह के शांत होने पर अत्यन्त संतोष प्रकट किया। लाहौर में **फतह खां जाट** तथा हिन्दु **बलूच सरदार** को मौत के घाट उतार दिया गया। इसके बाद **शेरशाह** ने विरोध खत्म होने पर **हैवात खां को आजम हुंमायू** का खिताब तथा अंगूरी रंग के शामियाना प्रदान कर **मसद आला** का पद उपहार स्वरूप दिया।[9]

मुगल सम्राट भाहजहां तथा जाट विद्रोह (1627 – 1658 ई0)

जहांगीर की भोग विलासी तथा शासन में उपेक्षा पूर्ण नीति के फलस्वरूप उसके शाही कर्मचारी अधिक भ्रष्ट हो गये थे। किसानों से अधिक कर बसूल कर जनता पर अत्याचार करने लगे। किसानों की सहन शीलता की शक्ति टूटने ही वाली थी कि अक्टूबर 1627 ई0 में सम्राट की मृत्यु होने पर राजकाज में अव्यवस्था फैल गयी।

महावन परगाना तथा जाट किसानों का संगठित विद्रोह (1628 ई0)

पंजाब में सर्वप्रथम मुगल साम्राज्य के संस्थापक **बाबर** को टक्कर देने वाले **शेरशाह** से पराजित **हुमांयु** विलग्राम युद्ध (ई0 1540) तथा उसके परिवार को आगरा से **जाट** प्रधान क्षेत्र में हो पर **रेवाड़ी** तक परेशान तथा लूटने वाले[10] स्वाधीनता के पुजारी **जाटपालों ने शाहजंहां** के राज्यारोहण से पूर्व ही अराजकता तथा राजधानी **अकबराबाद** के समीप ब्रजप्रदेश के अन्य सजातीय भाइयों के साथ संगठित होकर भूराजस्व अदा करने से इनकार कर दिया। इतना ही नहीं इन्होंने भारतीयत्व स्वाधीनता तथा क्षेत्रीय स्वराज की भावना से ओत प्रोत होकर शाही खजानों पर भी हाथ साफ करना प्रारम्भ कर दिया। **महावन** परगने के जाट किसान मजदूरों ने **ब्रजमण्डल** स्थित अन्य सजातीय व दूसरी जाति के किसान मजदूरों का नेतृत्व किया।

4 फरवरी 1628 ई0 को **भााहजहां** विधिवत रूप से मुगल सम्राट बना। इसके बाद उसने राजाओं तथा जागीरदारों को सम्मानित किया। आमोर के नवयुवक **मिर्जा राजा जयसिंह** सम्राट से प्रतिष्ठा पा चुका था। अप्रैल 1628 ई0 में **शाहजहां ने महावन** मुहाल के जाट विद्रोह को दबाने के लिए **कासिम खां किजवीनी** व उसकी सहायता के लिए **मिर्जा राजा जयसिंह** को कछवाह राजपूत फौज के साथ भेजा गया। मुगल सम्राट के दो सेनापतियों के संगठित फौजी दबाव के कारण **महावन** परगने मे शांति स्थापित हो गयी परन्तु क्रान्तिकारी तथा विद्रोही बगावत की अग्नि को यह फौजी कार्यवाही शांत नहीं कर सकी और वह शनैः शनैः–धधकने लगी।[11]

सम्राट शाहजहां के शासन काल में **जाटशक्ति** का विकास क्रांतिकारी समाज के रूप में हुआ। सम्राट की कठोर मुस्लिम नीति नये जागीरदार तथा मनसबदारी प्रथा की वृद्धि के कारण **जाट** पुनः संगठित हो गये।[12] यद्यपि वह अपने पूर्वज **अकबर तथा जहांगीर** की भांति उदार सहिष्णु अथवा समन्वयवादी नहीं था। शासन के अन्तिम वर्षो में उसका झुकाव नम्रता के साथ मुस्लिम जाति की ओर था जिसका लाभ धर्मान्ध सूबेदारों तथा फौजदारों ने उठाया। जमींदारों द्वारा अधिक लगान की मांग, विभित्र प्रकार के नवीन करों की वसूली तथा उनके अत्याचारों के कारण जाट काश्तकारों का पुराना स्वाभिमान जाग उठा।[13] 1633 ई0 में जाटों के नेतृत्व में अन्य जातियों ने भी संगठित होकर स्वाधीनता का शंखनाद किया। चारों ओर अराजकता फैला दी। इसी समय **भीम सिनसिनवार** की पांचवी पीढ़ी मे उत्पन्न **रोरिया सिंह** ने **सिनसिनी मौजा** के आसपास ग्रामीण किसान तथा संगोत्री भाईयों को एकत्रित करके **डूंग** पंचायत की सरदारी प्राप्त कर ली तथा व्यापक उपद्रव करना प्रारम्भ कर दिया। प्रारम्भ मे **शाहजहां** ने **जाटों** के विद्रोह को कोई खास महत्व नहीं दिया। अतः जनता ने लगान या अन्य नवीन कर रोके कर [14] विरोध किया।[15] मुगल सरकार ने सहानुभुति पूर्वक विचार की अपेक्षा दमनात्मक रूख अपनाया और **ब्रजप्रदेश** में अत्याचारों का श्री गणेश किया।[16]

मर्शीद कुली खां तुर्कमान तथा ब्रज प्रदेश के जाट

सम्राट **शाहजहां** ने ब्रज मण्डल में व्याप्त अराजक वृत्ति का दमन तथा सुव्यवस्थित रूप से लगान बसूली की व्यवस्था करने के लिए **मुर्शीद कुली खां तुर्कमान को कांमा, पहाडी, मथुरा तथा महावन** परगनों का सर्वाधिक सम्पन्न फौजदार बना कर भेजा। **मुर्शीद कुली खां** के रवाना होने के पूर्व उसको मनसब 2000 जात तथा 2000 सवार देकर व झण्डे का प्रतीक प्रदान कर सम्राट की ओर से सम्मानित किया गया। **मुर्शीद कुली खां तुर्कमान** अपने शक्तिशाली सैनिक दल को साथ लेकर मथुरा पहुंचा। यहॉ पहुंचकर उसने इन अल्हड़ जाट किसानों को दबाने के लिए प्रत्येक परगने में महत्वपूर्ण स्थानों को केन्द्र बिन्दू बनाकर सैनिक चौकियां स्थापित की। उसने जाटों की कच्ची गढ़ी तथा थूनियों पर जमकर हमले किये। परन्तु कृषक समुदाय की स्वतंत्र चेतना को समाप्त करने में विफल रहा। इतना ही नहीं उसने अपनी राजनीतिक हैसियत तथा शक्ति का दुरूपयोग करना भी प्रारम्भ कर दिया। सैनिक अभियानों के माध्यम से उसने जनसाधारण पर अत्याचार करने प्रारम्भ किये। वह इसके अतिरिक्त कामुक प्रवृत्ति का हो गया वासना की तीव्रता का अन्दाजा इसी से लगता है कि हिन्दू बस्ती लूटने के दौरान वह सुन्दर बालाओं को कैद कर अपने हरम में शामिल करने लगा। सामान्य जन समुदाय उसकी शक्तिशाली सेना के समक्ष विरोध करने मे असफल रहते थे। इस प्रकार **मुर्शिद कुली खां** की काम–पिपासा एवं अमानुषिक अत्याचारों ने जन साधरण को झकझोर कर रख दिया तथा नागरिकों की सुसुप्त भावनायें जागृत हो गयी। अब यह विरोध जाट कृषक समुदाय तक सीमित न रह कर दो वर्ष के अनवरत संघर्ष काल में अन्य हिन्दू जातियों के भी जीवन का एक अंग बन गया। इस प्रकार इसका क्षेत्र

संकीर्ण न हो कर व्यापक आधार युक्त हो गया।[17] **मुआसिरूल उमरा में मुर्शिद कुलीखां तुर्कमान** के पापाचारों का विशद वर्णन प्राप्त होता है जन्माष्टमी के दिन मथुरा के पास यमुना नदी के उस पार गोवर्धन में हिन्दुओं का बड़ा मेला लगता था। हिन्दुओं की तरह पर माथे पर तिलक लगाये धोती पहने खां पैदल ही उस भीड़ में चला जाता था और जब कभी वह किसी चन्द्रमुखी, लावण्यमयी बाला को देखता उस पर मेमनों के झुण्ड पर झपटने वाले भेड़िये की भांति झपटता था और उसे पकड़ भगा ले जाता। यमुना के किनारे उसके आदमी नौका तैयार रखते जो उसे बैठाकर तेजी से आगरा ले जाते। उनकी पुत्री का क्या हुआ? इस बारे में हिन्दू कुछ भी नही कह पाते थे।[18] इस प्रकार इसके अत्याचारों से तंग आकर जनता के प्रत्येक वर्ग में आक्रोश की आग भड़क उठी। इस आक्रोशित वर्ग में ब्रज का कृषक समुदाय सबसे अधिक सक्रिय था। इन्होने क्रान्तिकारी नवयुवकों की छोटी – छोटी टोलियां बना कर अपने आप को संगठित करने लगे और मुगलों की सैनिक चौकियों पर हमले करने लगे। विद्रोहियों की छापामार कार्यवाहियों से परेशान होकर मुर्शीद कुली खां ने जटवाढ़[19] नामक गांव पर हमले किये क्योकि यह गांव इन विद्रोहियो का गढ़ माना जाता था। विद्रोहियों ने अपने सैनिकों सहित गढ़ से निकल कर युद्ध किया। **मुर्शिद कुली खां** 1638 ई0 में युद्ध में मारा गया[20] तथा मुगल सेना युद्ध का मैदान छोड़ कर भाग गई। **मुर्शिद कुली खां** के पापाचारों का अंत[21] होने पर ब्रज मण्डल की जनता ने राहत की सांस ली। मुगलों की धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा समाजिक नीतियों के कारण विद्रोह की यह चिंगारी धीरे–धीरे सुलगती रही। सन् 1642 ई0 में **शाहजहां ने इरादत खां** को क्षेत्र[22] का फौजदार नियुक्त किया। उदार और नैतिक व्यक्ति होने के कारण विद्रोहियों पर आवश्यक सख्ती नहीं की गई। फिर भी परिवर्ती व पूर्ववर्ती फौजदारों की अपेक्षा ब्रज मण्डल में आवश्यक शांति व्यवस्था बनाये रखी। अन्ततः शाहजहां की नीतियों में खरा न उतरने के कारण उसे 1646 में हटा दिया गया।[23]

हिण्डौन मुहाल का विद्रोह (1637– 1640 ई0)

मथुरा, कांमा, पहाड़ी तथा महावन परगनों के विद्रोह का प्रभाव हिण्डौन परगाना क्षेत्र पर भी पड़ा। यहां पर आबादी भोली – भाली कृषक जनता जिनमें जाट, गुर्जर, मीणा व राजपूत थे ने **शाहजहां** की राजस्व नीति के विरोध में लगान न देकर उपद्रव प्रारम्भ कर देने पर **शाहजहां** ने 4 जून 1637 ई0 को **आमेर राजा जय सिंह** को इनको दण्डित करने तथा परगने में शान्ति व्यवस्था करने के लिए शाही आदेश जारी किया। परगने में शान्ति व्यवस्था करने के लिए स्पष्ट आदेश दिया गया था, हिण्डौरन मुहाल की खालसा भूमि का लगान वसूल करने तथा इस वसूली में अड़चन डालने वाले काश्तकार खेवटिया किसानों का दमन करने का निश्चित आदेश था। शाही आदेश प्राप्त होते ही जयसिंह आमेर से हिण्डौन, कछवाह फौज के साथ पहुंचा। जय सिंह की सैनिक शक्ति के कारण किसानों ने लाचार व परेशान होकर भू–राजस्व अदा कर दिया परन्तु यह उस क्षेत्र की जनता का स्थायी हल नहीं था। क्योंकि क्षेत्रीय जनता प्रशासनिक एवं भू–राजस्व व्यवस्था से सन्तुष्ट नहीं थी। इस प्रकार की स्थिति प्रति वर्ष आने लगी। 24 अप्रैल 1640 को **शाहजहां** ने उस क्षेत्र में स्थायी शांति व्यवस्था के लिए **राजा जय सिंह** को शाही फरमान जारी कर[24] हिण्डौन मुहाल के करोड़ी सागरमल की सहायता के लिए नियुक्त किया। उसके साथ ही **राजा जय सिंह** को यह अधिकार भी दिया गया कि वह स्वाविवेक से विद्रोही किसानों तथा काश्तकारों को दण्डित करें और परगने से बेदखल करें। इस प्रकार **शाहजहां** यह जानता था कि यह क्षेत्र विद्रोहियों का गढ़ बनता जा रहा है। परन्तु उसने इन कारणों को दूर करने के प्रयास कभी नहीं किये।

कामा, पहाड़ी तथा खोह परगाना का विद्रोह तथा मिर्जा राजा जयसिंह (1649–1651 ई0)

भरतपुर राज्य के इतिहासकारों का मत है कि **रौरिया सिंह** के पुत्र **बिजै सिंह के मदू और गौकुला** नाम के दो पुत्र थे।[25] मदू को **सूजान** चरित्र में **महीपाल व शाह का उरसाल**[26] नाम से विभूषित किया गया है।[27] यह वीर, साहसी, चरित्रवान तथा क्रातिकारी जमींदार था। इसने **सिनसिनी** गांव के ठाकुर मुखिया का पद प्राप्त कर शाही फौजदार **किरोड़ी सागर मल** का विरोध करके डूंग तथा समीपवर्ती अन्य **जाटपालों** में उचित सम्मान तथा स्थान प्राप्त कर लिया था। इसने अपने चाचा **सिंघा** के नेतृत्व में एक मजबूत क्षेत्रीय किसान संगठन तैयार किया। इस संगठन में **खान, जादौ, मेवाती, जाट, गूजर** तथा अन्य बिरादरियों के नवयुवक थे तथा यह **कामा, पहाड़ी,** कस्वा **खोह** इत्यादि आसपास के मुहालों से थे। इन्होंने आगरा तथा दिल्ली के मध्य

खालसा गांव सरकार के अधिकृत गांव तथा शाही मार्गो में काफिलों तथा व्यापारियों को छापामार रणनीति के तहत लूटना प्रारम्भ कर दिया जिसके फलस्वरूप शाही मार्ग पर आवागमन प्रायः बंद हो गया।[28] स्वाभिमानी नवयुवकों की क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण उस क्षेत्र के जागीदारों, किसानों से भू राजस्व बसूलने में असफल रहे। साथ ही खालसा गांव तथा उसकी खेती उजाड़ने लगी। सिंघा तथा मदू सिनसिनवार के नेतृत्व में क्राति की व्यापकता व मेवात के क्षेत्रीय फौजदार आमिल और जागीरदारों की विफलता से हतप्रभ होकर सम्राट शाहजहां ने आमेर के **मिर्जा राजा जय सिंह** को इन परगनों के क्रातिकारियों को हर सम्भव प्रयासों द्वारा कुचलने के लिए 1 जुलाई 1650 ई0 को नियुक्त किया। सम्राट ने **जयसिंह** को यह अधिकार भी दिया कि वह स्वविवेक से इन विद्रोहियों से निपटे। **मिर्जा राजा जय सिंह** की व्यक्तिगत कमान में नियुक्त फौज क्रातिकारियों को दबाने में सक्षम नहीं थी। इस लिए सम्राट ने शाही सेना के अतिरिक्त व्यय के लिए प्रबन्ध किये। तत्पश्चात **राजा जयसिंह** ने आमेर के 4000 सवार 6000 पैदल बंदूकची तथा जंगलों को साफ करने वाले बेलदारों की एक अतिरिक्त सेना तैयार की और इन क्रातिकारियों के दल वाले परगनों में डेरा जमा कर बैठ गये।[29] उसने शीघ्र ही घने जंगलों को साफ करवाना प्रारम्भ कर दिया परन्तु इसके अतिरिक्त उस क्षेत्र के लिए कुशल प्रशासनिक अधिकारी की आवश्यकता थी जिसके लिए सम्राट **शाहजहां** ने सितम्बर 1650 ई0 को **राजा जय सिंह के द्वितीय** पुत्र **कुँवर कीरत सिंह** को 800 जात व 800 सवारों का मनसब प्रदान कर कामा, पहाड़ी तथा खोह की परगनो की जागीर प्रदान की। **मिर्जा राजा जय सिंह, कीरत सिंह तथा कल्याण सिंह नरूका** तथा कछवाह राजपूतों की फौजी ताकत के सहारे एक वर्ष तक निरंतर संघर्ष करता रहा। इन्होंने स्वाधीनता की मांग करने वाले व्यक्तियों को बाहर निकालने के लिए भूमि से बेदखल किया और उनकी कच्ची गढ़ियों को ध्वस्त कर जंगलो को पूर्ण सुरक्षित कर लिया। मदूसिंह व उसके चाचा सिंघा ने अन्य मेवातियों के साथ जमकर संघर्ष किया। अनवरत् संघर्ष के पश्चात शक्तिशाली कछवाह तथा मुगल फौज के समक्ष असंख्य मेंव, खान, जादौ, गूजर तथा जाट किसान परिवार मारे गये या बंदी बना लिए गये। सैकड़ो की संख्या में कृषक अपनी भूमि को छोड़कर भागने को विवश हो गये। किसानों के हजारों पशुओं पर मुगल सेना का अधिकार हो गया। जाट परिवार संघर्ष शील जीवन व्यतीत करते हुये मुगल प्रशासन के साथ घात – प्रतिघात करते रहे। सम्राट **शाहजहां ने मिर्जा राजा जयसिंह** को इन परगनों में अपने विश्वास पात्र राजपूत सरदार, जागीरदार तथा परिवारों को बसाने का आदेश दिया जिससे वह यहां बस कर स्थायी शांति तथा सुव्यवस्था की स्थापना में सहायता कर सके। सतत् प्रयास तथा कठिन परिश्रम से **मिर्जा राजा जय सिंह** ने इन विद्रोहियों को दीर्घ संघर्ष के पश्चात दबाने मे सफलता प्राप्त की । इन विजयों के बाद उपहार स्वरूप **सम्राट भाहजहां ने कीरत सिंह** के मनसब में बढ़ोत्तरी की और उसे मेवात का फौजदार नियुक्त कर दिया। इस प्रकार कांमा, पहाड़ी तथा खोहरी के परगने **कीरत सिंह** तथा उसके परिवार के हाथों में स्थायी रूप से चले गये।[30]

सन्दर्भ

1. सिन्धु नदी का उपरी भाग नीलाभ कहलाता है। 16 वीं शदी में सिन्धु नदी के पूर्वी किनारे पर काबुल नदी के संगम से कुछ दूर निलाभ नगर विद्यमान है। (डीलाइट : दा एम्पाअर ऑफ ग्रेट मुगल – अनुवादक जे0एस0हार्डलैण्ड, 1928, पृष्ठ 5) यह स्थान सिन्धु नदी के उपर तथा अटक से 15 मील नीचे है।
2. भीरा झेलम नदी पर पंजाब के शाहपुर जिले की तहसील है।
3. ए.एस.बेवरीस : मेमायर्स ऑफ बावर, पृष्ठ 387, 454।
4. डॉ. जदुनाथ सरकार : मिलिट्री हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, पृष्ठ 50।
5. मुस्लिम इतिहासकारों ने शासन के विरूद्ध बगावत करने वाले प्रत्येक स्वतन्त्रता प्रेमी के लिये अपशब्दों का प्रयोग किया है। लुटेरा इसी मानसिकता का प्रतीक है।
6. डॉ. उपेन्द्र नाथ शर्मा के अनुसार सतगढ़ लाहौर से 65 मील दक्षिण पश्चिम में है।
7. इन्हीं के अनुसार पाकपत्तन सतगढ़ से 44 मील दक्षिण में है।
8. यह दोंनों स्थान सतलज नदी के उत्तर से क्रमश : 7.5 व 5.5 मील दूर है। फतेहगढ़ कुहुरोर के उत्तरपूर्व से 17 मील है।

9. इलीयट व डाउसन : (तारीखे शेरशाही) खण्ड 4, पृष्ठ 117–118।
डॉ0 कानूनगो : शेरशाह, पृष्ठ 308–311 ।
यू.एन.शर्मा : जाटों का नया इतिहास, पृष्ठ 52।
10. डॉ. कानूगो : शेरशाह, पृष्ठ 252–253।
11. मआसिरूल उमरा : काशी नागरी प्रचारणी सभा, भाग–1, पृष्ठ 1551।
डॉ. भार्गव : राजस्थान का मध्यकालीन इतिहास, पृष्ठ 1821।
12. मोरलैण्ड : द एग्ररियन सिस्टिम आफ मुसलिम इण्डिया, पृष्ठ 93, 125, 235–237।
13. डॉ. बनारसी प्रसाद : हिस्ट्री ऑफ शाहजहां आफ देहली, पृष्ठ 90–91, 244, 271, 291।
14. डॉ. सरकार : हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब, भाग–3, पृष्ठ 330।
15. मथुरा, कांमा, महावन व पहाड़ी के पहाड़ियों में रहने वाले नागरिकों ने गढ़ी तक बीहड़ क्षेत्रों में शरण लेकर सर्वप्रथम क्रान्ति का सूत्रपात किया। मआसिरूल उमर, (न0प्र0अ0) खण्ड 1, पृष्ठ120।
16. डॉ. यू.एन.शर्मा : जाटों का नवीन इतिहास, पृष्ठ 72–76।
17. श्री कृष्ण दन्त वाजपेयी : ब्रज का इतिहास, पृष्ठ 158।
18. मआसिरूल उमरा : (न.प्र.) भाग–4 पृष्ठ 485–486। डॉ. सरकार : औरंगजेब, भाग – 3, पृष्ठ 331–332।
19. इलियट एण्ड डाउसन : बाबर नामा, खण्ड 2, पृष्ठ 7। इलियट एण्ड डाउसन : (मुन्तखबुल्लूवाब), भाग– 1 पृष्ठ 552।
20. मआसिरूल उमरा : बादशाहनामा व सरकारकृत औरंगजेब के विपरीत इरविन ने लेटर मुगलस, भाग – 1 पृष्ठ 331 पर उल्लेख किया है कि यह 1637 ई. की घटना है।
21. मआसिरूल उमरा : भाग – 1 पृष्ठ 120 पर, शाहजहाँ के समय मथुरा, कामां, महावन तथा पहाड़ी का फौजदार मुरसिद कुली खाँ जाट जाति की बस्ती पर आक्रमण करते समय गोली से मारा गया।
22. मथुरा, कामां, महावन तथा पहाड़ी परगनों का सर्वाधिकार सम्पन्न फौजदार नियुक्त किया।
23. कृष्ण दन्त वाजपेयी : ब्रज का इतिहास, पृष्ठ 159।
24. जयपुर अखबरात : संख्या 44।
यू.एन.शर्मा जाटों का नवीन इतिहास, पृष्ठ 77–78।
25. बलदेव सिंह : तबारीख भरतपुर, पृष्ठ 14, ज्वाला सहाय मुंसिफ : वाक्या राजपूताना, 3 ई, भाग–2, पृष्ठ 427।
26. शाहजहां के ह्रदय का कांटा।
27. सूदन : सुजान चरित्र, पृष्ठ 4
28. मसीरूल उमरा : न0प्र0, भाग – 1, पृष्ठ 120।
यू.एन.शर्मा : जाटों का नवीन इतिहास, पृष्ठ 79–80।
29. डॉ. बी.एस.भार्गव : राजास्थान का मध्यकालीन इतिहास, पृष्ठ 182।
30. मसिरूल उमरा : न0प्र0, खण्ड – 1, पृष्ठ 102, 120, 159, 160।
डॉ. बी.एस.भार्गव : राजास्थान का मध्यकालीन इतिहास, पृष्ठ 183।
डॉ. यू.एन.शर्मा : जाटों का नवीन इतिहास, पृष्ठ 80–81।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. कालिका रंजन कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ जाट्स, 1925।
2. वही : जाटों का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स दिल्ली, 1996।
3. ए0एस0 बेबरीज : मेमोयर्स ऑफ बावर।
4. डॉ जदुनाथ सरकार : मिलिट्री हिस्ट्री ऑफ इण्डिया।

5. डॉ0 के0 आर0 कानूनगो : शेरशाह।
6. इलियट व डाउसन : तारीखे शेरशाही।
7. मआसिरूल उमरा : काशी नागरी प्रचारणी सभा, भाग–1
8. उपेन्द्र नाथ शर्मा : जाटों का नवीन इतिहास, मंगल प्रकाशन, जयपुर, 1977।
9. डॉ0 बी0 एस0 भार्गव : राजस्थान का मध्यकालीन इतिहास।
10. मोरलैण्ड : द एग्रियन सिस्टम ऑफ इण्डिया।
11. डॉ0 बनारसी प्रसाद : हिस्ट्री ऑफ शाहजहां ऑफ देहली।
12. इलियट एण्ड डाउसन : बाबरनामा, खण्ड –2 ।
13. कृष्ण दत्त वाजपेयी : ब्रज का इतिहास, अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा, संवत 2011।
14. मआसिरूल उमरा : बादशाह नामा।
15. बल्देव सिंह : तबारीख भरतपुर।
16. ज्वाला सहाय मुंसिफ : वाक्या राजपूताना, भाग –2।
17. प्रभुदयाल मीतल : ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास, राजकमल प्रकाशन पटना, 1966।
18. महाकवि सूदन : सुजान चरित्र, काशी नागरी प्रचारणी सभा, संवत 1980।
19. डॉ जदुनाथ सरकार : हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब, भाग 1,2,3,4,5 कलकत्ता, 1925, 1925, 1928, 1930,1924।
20. वही : फाल ऑफ दी मुगल एम्पायर, भाग – 2, अनुवादक डॉ0 मथुरा लाल शर्मा।

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य – एच के एल कालेज ऑफ ऐजूकेशन, गुरूहरसहाय, फिरोजपुर (पंजाब)